अष्टक २४

(राग: देस - ताल: त्रिताल)

पातकी घातकी मी असें किं असा। मन हे भजनीं न वसे सहसा। नाहिं देव द्विजाप्रति पूजियला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला।।१।। विषयांध आणि अति मंदमती। किंधं नाहिंच केली तुझिये स्तुती। दुर्बुद्धि बहु सुजनी छिळला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला।।२।। स्वधर्म तो सोडि अधर्म धरी। परदारधना अभिलाष करी। धिर संगत मी कुश्चळ कुटिला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला।।३।। अन्यायी खरा पिर दास तुझा। अपराध क्षमा किर कोण दुजा। धिर हातीं मला किर तू आपुला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला।।४।। कनवाळु तुझेविण कोणि नसे। वदती अठरा आणि साहि तसे। अति पापी अजामिळ उद्धरिला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला।।५।। अरि मित्र समान तुला श्रीहरी। मजला ही प्रतीति आलीसे बरी। पुतनाप्रति मोक्ष तुंवा दिधला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभुजी प्रभुजी प्रभुजी प्रभुजी रिभुजी रिभु तारि मला।।६।। पातकी शरणागत होय जरी। गुण-

दोष न जाणिस मुक्त करी। म्हणुनि दिनवत्सल नाम तुला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला।।७।। विनवीतसे माणिकदास तुला। निर्दाळुनि पातक तारि मला। हीन दीन परी पदरीं पडला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला।।१।।